पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलॉजी तथ्य चार्ट

हाइपरथायराइडिज्म: परिवारों के लिए मार्गदर्शक जानकारी

हाइपरथायराइडिज्म क्या है?

जब थायराइड ग्रंथि (ग्लैंड) सामान्य से अधिक मात्रा में थायराइड हार्मोन का उत्पादन करती है, इस अवस्था को हाइपरथायराइडिज्म कहते हैं। यह किसी भी उम्र में हो सकता है। दस साल की उम्र के बाद और लड़कियों में हाइपरथायराइडिज्म होने की संभावना ज्यादा होती है। बच्चों में हाइपरथायराइडिज्म के कुछ ही लक्षण जाहिर होते हैं।

हाइपरथायराइडिज्म के लक्षण क्या होते हैं?

- दर्द-रहित थायराइड ग्रंथि का बढ़ना (गोइटर)
- ज्यादा भूख लगने के बावजूद वजन कम होना
- अत्यधिक पसीना आना
- अत्यधिक गर्मी लगना
- तीव्र हृदय गति या दिल में घबराहट
- पढ़ाई में एकाग्रता की कमी
- मनोदशा का बारंबार परिवर्तित होना
- नींद आने में दिक्कत
- उभरी हुई आंखें
- हाथों में कंपकंपी
- बेचैनी
- दस्त

हाइपरथायराइडिज्म के कारण क्या होते हैं?

बच्चों में हाइपरथायराइडिज्म का सबसे आम कारण ऑटोइम्यून हाइपरथायराइडिज्म (ग्रेव्ज़ डिजीज) होता है। शरीर का इम्यून सिस्टम ऐसी एंटीबॉडी बनाता है जो थायराइड ग्रंथि को अत्यधिक मात्रा में थायराइड हार्मोन बनाने का संदेश देती है।

हाइपरथायराइडिज्म के अन्य कारण इस प्रकार से हैं:

- हाशिमोटो डिजीज: इसमें शरीर द्वारा बनाई जाने वाली एंटीबॉडी थाइरॉयड ग्रंथि में सूजन पैदा करती है और अत्यधिक मात्रा में थायराइड हार्मोन रक्त में रिहा हो जाता है।

- सब-अक्यूट थ्यरैडैटेस: वायरल बीमारी के दोरान थायराइड ग्रंथि में सूजन पैदा हो सकती है। इस अवस्था में थायराइड ग्रंथि में दर्द महसूस हो सकता है।

- थायराइड ग्रंथि में गांठ: थाइरॉयड ग्रंथि में पाए जाने वाली कुछ गांठे अत्यधिक मात्रा में थायराइड हार्मोन बना सकती हैं।

हाइपरथायराइडिज्म का डायगनोसिस कैसे होता है?

खून की जांच द्वारा हाइपरथायराइडिज्म के डायगनोसिस की पुष्टि की जा सकती है। इस अवस्था में थायराइड हॉर्मोन (Free T4 और Total T3) के स्तर ज़्यादा और TSH (थाइरोइड स्टिमुलेटिंग हार्मोन) का स्तर कम होता है। थायराइड ग्रंथि का आकार और क्रिया जांचने के लिए कभी-कभी थायराइड स्कैन या रेडियो आयोडीन स्कैन करवाने की जरूरत भी पड़ सकती है।

हाइपरथायराइडिज्म का इलाज कैसे होता है?

हाइपरथायराइडिज्म का कारण जानकर ही उपयुक्त इलाज किया जा सकता है। हाइपरथायराइडिज्म के इलाज के 3 प्रमुख तरीके हैं:

1. एंटी-थाइरोइड दवाइयां: मेथेमाजोल (Methimazole) नामक दवाई बच्चों में सुरक्षित मानी गयी है। इस दवाई के कुछ ही दुष्प्रभाव हैं, जैसे कि एलर्जी, जोड़ों में दर्द, जिगर के एंज़ायम

बढ़ना और रक्त गणना का कम होना। परोपायल-थीयोरसिल (Propylthiouracil) से जिगर को तीव्र क्षति होने की संभावना होती है, इसलिए यह दवाई बच्चों में इस्तेमाल नहीं होती।

जिन बच्चों का इलाज मेथेमाजोल द्वारा किया जाता है, उनमें से एक तिहाई बच्चों को इस दवाई की आवश्यकता 2 साल के बाद नहीं पड़ती। कुछ बच्चों को इलाज पुनः आरंभ करने की जरूरत नहीं पड़ती, हालांकि कुछ बच्चों में इलाज बंद करने के बाद हाइपरथायराइडिज्म के लक्षण दोबारा आ जाते हैं।

2. रेडियो-एक्टिव आयोडीन द्वारा पृथक करना: रेडियोएक्टिव आयोडीन को एक कैप्सूल या सिरप के रूप में निगला जाता है। यह बिना दर्द के थायराइड ग्रंथि को कुछ महीनों में नष्ट कर देता है, ताकि थायराइड ग्रंथि थायराइड हार्मोन न बना पाए। इस इलाज के बाद मरीज को हाइपोथायरायडिज्म (सामान्य से कम थायराइड हार्मोन) हो जाता है। हाइपोथायरायडिज्म के इलाज के लिए रोज़ लिवोथ्यरोकसिन (Levothyroxine) की गोली लेनी अत्यावश्यक है।

बच्चों में रेडियो-एक्टिव आयोडीन द्वारा इलाज सुरक्षित पाया गया है, परंतु गर्भवती उम्र की महिलाओं में यह उपयुक्त नहीं है।

3. सर्जरी: थायराइड ग्रंथि को सर्जरी द्वारा निकाला जा सकता है। इससे थायराइड हार्मोन के स्तर तुरंत कम हो जाते हैं। सर्जरी के बाद मरीज को हाइपोथायरायडिज्म हो जाता है और रोज़ लिवोथ्यरोकसिन (Levothyroxine) की गोली लेने की ज़रूरत पड़ती है।

थायराइड सर्जरी में रेडियो आयोडीन से ज्यादा जोखिम होने की संभावना होती है, इसलिए थायराइड सर्जरी एक अनुभवी सर्जन द्वारा ही करवाई जानी चाहिए। थायराइड सर्जरी के दौरान पैराथाइरॉइड ग्रंथि और आवाज़ का नियंत्रण करने वाली नस को क्षति हो सकती है।

कुछ बच्चों में बीटा-ब्लॉकर्स जैसी दवाइयों (Propranolol और atenolol) का इस्तेमाल भी करना पड़ सकता है। ये दवाइयां हाइपरथायराइडिज्म का स्थायी इलाज नहीं हैं, लेकिन ये हृदय की गति, हाथों का कांपना और बेचैनी को कम करने में मदद करती हैं। अपने पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलोजिस्ट की मदद से आप अपने बच्चे के लिए सबसे उपयुक्त इलाज चुन सकते हैं।

यह जानकारी पीडियाट्रिक एंडोक्राइन सोसाइटी के मरीज शिक्षा अनुभाग की सहायता से छपी है।

PES PEDIATRIC ENDOCRINE SOCIETY